IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. निशा सिंह
अतिथि विद्वान समाजशास्त्र विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश

''एक नारी को शिक्षित करने का अर्थ एक परिवार को शिक्षित करना है।'' वर्तमान युग को वैचारिकता का युग कहा जा सकता है। अगर स्त्री या माता अथवा गृहिणी के संस्कार शिक्षा–दीक्षा आदि उत्तम नहीं होगी तो वह समाज और राष्ट्र को श्रेष्ठ सदस्य कैसे दे सकती है?, समाज के लिए स्त्री का स्वस्थ, खुशहाल, शिक्षित, समझदार, व्यवहार कुशल, बुद्धिमान होना जरूरी है और वह शिक्षा से ही सम्भव है। जब स्त्री की स्वयं की स्थिति सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक आदि दृष्टिकोणों से निम्न होगी तो वह परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे पायेंगी, यह प्रश्न अत्यन्त चिन्तशील है क्योंकि एक तो स्त्रियाँ स्वयं राष्ट्र की आधी से कम जनसंख्या है तथा दूसरा, बच्चे, युवा, पौढ़ और वृद्धजन उन पर अपनी पारिवारिक आवश्यकताओं के लिए निर्भर रहते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

[1]. देवपुरा प्रतापभल, 'महिला सशक्तिकरण में शिक्षा का महत्व' कुरूक्षेत्र अंक 5 मार्च 2006
[2]. मकोल नीलम, शर्मा संदीप, सामाजिक विकास में शिक्षित महिलाओं का या गोदान, कुरूक्षेत्र सितम्बर 2006
[3]. लवानिया, एम.एम. (1989),''समाज शास्त्रीय अनुसंधान का तर्क एवं विधियाँ'', रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर।
[4]. अंसारी, एम.ए. (2001), ''महिला और मानवाधिकार'', ज्योति प्रकाशन, जयपुर।
[5]. मिश्रा के.के. (1965), '''विकास का समाजशास्त्र'', वैशाली प्रकाशन, गोरखपूर।
[6]. श्रीवास्तव, सुधा रानी (1999), ''भारत में महिलाओं की वैधानिक स्थिति'', कॉमनवेल्थस पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
[7]. जैन, प्रतिभा (1998), ''भारतीय स्त्री : सा ंस्कृतिक सन्दर्भ'', रावत पब्लिकेशन, जयपुर।

तिवारी, आर.पी. (1999), ''भारतीय नारी : वर्तमान समस्याएँ एवं समाधान'', नई दिल्ली।